अक्टूबर २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

रूठता कौन है?

संपादकीय

बाल मित्रों,

सभी सुपरहीरोज़ के पास एक सुपरपावर होता है। जब उन्हें अपना मनचाहा काम करना हो तब वे इस सुपरपावर का उपयोग करते हैं और जब हमें हमारा मनचाहा करना हो और नहीं कर पाते तो हम कौन से सुपरपावर का उपयोग करते हैं? रूठ जाते हैं!

सुपरहीरोज़ अपने सुपरपावर्स का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। लेकिन हमारे रूठने से हमारा या किसी का भी भला नहीं होता। सिर्फ नुकसान ही नुकसान होता है!

इस अंक में जानते हैं कि रूठने से क्या होता है? ऋषि ने कभी नहीं रूठने का निश्चय क्यों किया? लीली को नहीं रूठने पर क्या गिफ्ट मिला? और हाँ, आलू - चिली की दुनिया में आगे क्या हुआ?

चलो, पढ़ते हैं।

\- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

October, 2025
Year 13, Issue : 07
Conti. Issue No.: 151
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://shorturl.at/zyqqd

चिली ने आलू के साथ झगड़ा किया। उसमें पार्सली बीच में आया, इसलिए चिली और भी ज्यादा गुस्सा हो गया और अंत में वह आलू से फ्रेन्ड्शिप तोड़कर चला गया। इस बात से आलू-चिली बहुत दुःखी हैं और पार्सली चिली के ऐसे व्यवहार से बहुत गुस्सा है। अब आलू आगे क्या करेगा?

इससे पहले कि मैं किसी से कुछ कहता कि तभी कोको बोली, 'सॉरी आलू, मैं जहाँ भी जाती हूँ वहाँ सब कुछ गड़बड़ ही हो जाता है!' और फिर वह भी रोते हुए चली गई। पार्सली ने फिर से बोलना शुरू किया, 'आलूभाई, यह चिली बहुत खराब बेस्ट फ्रेन्ड है। आप कोई नया बेस्ट फ्रेन्ड बना लो। एक बार हार गया तो कैसा व्यवहार कर रहा है! मैं अपने बेस्ट फ्रेन्ड के लिए अखबार में ऐड डालने वाला हूँ, क्या आपको भी डालना है?' और तभी उसके दिमाग में एक जबरदस्त आइडिया आया और वह मेरे पास आकर आँखें झपकाकर भोलेपन से कहने लगा, 'आ...लू...भा...ई... एक काम करते हैं, आप और मैं बेस्ट फ्रेन्ड बन जाते हैं।'

मैं उसे कुछ कहता, उससे पहले वह बोला, 'मैं बेस्ट सिंगर और आप बेस्ट डान्सर। वाह! क्या जोरदार पेयर होगा हमारा!' तभी जिफ्फी फिर से ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। मुझे पता नहीं कि वह पार्सली की बात से दुःखी होकर रो रहा था या यह सुनकर रो पड़ा था कि पार्सली खुद को बेस्ट सिंगर मानता है।

पार्सली को इस तरह मेरे आसपास उड़ता देखकर मुझे चक्कर आ गए। मैंने उसे सूंड से पकड़कर डाली पर बिठाया और कहा, 'चिली और मैं बेस्ट फ्रेन्ड हैं और चाहे जो हो जाए, हम हमेशा बेस्ट फ्रेन्ड रहेंगे...'

पार्सली ने मुझसे पूछा, 'लेकिन उसने तो...' मैंने उसे बीच में टोकते हुए कहा, 'वह मेरा बेस्ट फ्रेन्ड है, जब मैं बहुत छोटा था तब से और हमेशा रहेगा!'

यह सुनकर थीओ पूछे बिना नहीं रह सका, ‘आलू, उसने तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार किया फिर भी...?’ ये लोग चिली का आज का व्यवहार देख रहे हैं। लेकिन मुझे याद है कि चिली ने बचपन में मेरे लिए क्या किया था!

मैंने उन्हें बताया कि हम बेस्ट फ्रेन्ड कैसे बने।

‘मैं जन्म से ही बाकी सब से अलग था। बाकी सारे हाथी ग्रे कलर के थे और मैं ऐसा... ऊपर से मेरी पूँछ भी अलग थी। मैं जहाँ भी जाता, सब मेरा मज़ाक उड़ाते। एक दिन मैं सबके मज़ाक से तंग आकर रो पड़ा। तभी से उन्होंने मेरा नाम ‘रंगीन रोतलू’ रख दिया। उसके बाद से कोई मुझे आलू नाम से बुलाता ही नहीं था।’

'मैं पूरा दिन घर पर ही रहता था। मुझे कहीं भी जाना अच्छा नहीं लगता था। लेकिन जब मैंने पहली बार स्कूल के स्केटिंग क्लास के बारे में सुना, तो मुझे स्केटिंग करने का बहुत मन हुआ। मैंने हिम्मत जुटाई और स्केटिंग क्लास में ऐडमिशन ले लिया। तब उन सबने मुझे बहुत चिढ़ाया, 'देखना रोतलू, तुम गिर पड़ो तो तुम्हारा सारा कलर ज़मीन पर न गिर जाए।' 'अब रंगीन रोतलू स्केटिंग करेगा, स्केट्स भी तुम्हारे जैसे कलर के ही लेना।' मैं सबसे भागकर तालाब पर चला गया। वहाँ तालाब के पानी में खुद को देखकर सोचता रहा कि मैं बाकी सब से अलग क्यों हूँ...'

चिली ने ऐसा क्या किया था कि उसके इतने बुरे व्यवहार के बाद भी आलू ने उसके बारे में एक शब्द भी बुरा नहीं कहा। ऐसा क्या हुआ था कि जो बचपन में आलू को परेशान करते थे, आज आलू उन सबका फेवरिट बन गया है?

'अच्छा बस! तुम ही मेन डान्सर रहना। चलो अब, मान जाओ न। हमारे पास बहुत दिन नहीं बचे हैं। हमें कितनी सारी प्रैक्टिस करनी है।' अकुल ने ऋषि को मनाने की कोशिश की।

सिर्फ दो सप्ताह पहले ही शालीमार सोसाइटी के अकुल, साहिल और ऋषि ने गणपति बप्पा की स्थापना करते समय 'देवा श्री गणेशा' सॉन्ग पर डान्स करने का फैसला किया था। लेकिन दो सप्ताह में बारह बार ऋषि को कुछ न कुछ बुरा लगा था और उसने डान्स छोड़ने की धमकी दी थी। जैसे-तैसे करके अकुल ने उसे मनाया था।

'यार ऋषि, तुम बात-बात में बुरा क्यो मानते हो! हमें इतना अच्छा डान्स करना है कि सोसाइटी में सब हमें देखते रह जाएँ!' साहिल ने हिप-हॉप स्टाइल में सिर हिलाते हुए कहा।

"हाँ, और हमारे पास तो 'द विवेक गोसाईं' का यूट्यूब वीडियो भी है। तो बोलो, गणपति बप्पा...", अकुल के आवाज़ में जोश था।

'मोरिया!!' साहिल ने जोर से कहा और ऋषि मुँह फुलाकर बैठा रहा।

'तुम लोग सिर्फ अपने आइडिया के अनुसार ही सब कुछ करते हो! सॉन्ग भी तुम लोगों ने पसंद किया और डान्स के स्टेप्स भी तुम लोग कर पाओ ऐसे रखे हैं! और मेन डान्सर भी अकुल। मैं मेन डान्सर रहना चाहता हूँ।' ऋषि ने जिद करते हुए कहा।

'यह क्या गुब्बारे की तरह पूरे टाइम मुँह फुलाकर बैठ जाते हो?! एक दिन तुम्हारी सारी हवा निकल जाएगी।' साहिल ने झुंझलाकर कहा।

ऋषि गुस्सा होकर वहाँ से चला गया। उसके जाने के बाद साहिल और भी भड़क गया, 'अकुल, हम कब तक उसे मनाएँगे? उसे पता है कि उसके बिना डान्स नहीं हो पाएगा, इसलिए नखरे कर रहा है

और अब उसे मेन डान्सर भी बनना है। उसे पता है कि तुम उससे अच्छा डान्स करते हो, फिर भी... !'

'कोई बात नहीं, यार। उसे मनाने से डान्स अच्छा होता हो तो इसमें क्या परेशानी है? अब ज्यादा दिन नहीं रहे। रूठकर भी कितना रूठेगा!' अकुल ने साहिल को समझाने की कोशिश की और ऋषि की बात मानकर उसे मेन डान्सर बना दिया।

अब टाइम आ गया था, डान्स का आखिरी स्टेप सेट करने का। अकुल ने यूट्यूब वीडियो देखकर ऋषि को स्टेप बताया, 'देखो ऋषि, पहले तुम्हें दाईं तरफ जाकर दाहिना पैर उठाना है। फिर पूरा घूमना है और फिर...'

‘बस, बस, बस... मुझे यह सब बहुत कठिन लग रहा है। मुझसे नहीं होगा!’ ऋषि ने चिढ़ते हुए कहा।

‘हम प्रैक्टिस करेंगे तो तुम्हें आ जाएगा। चलो न, थोड़ी प्रैक्टिस करते हैं।’ अकुल ने कहा।

लेकिन ऋषि नहीं माना, ‘तुम लोग मुझे डान्स में रखना ही नहीं चाहते हो। इसलिए तुम इतने कठिन स्टेप्स रखते हो न? मुझे नहीं करना तुम लोगों के साथ डान्स।’

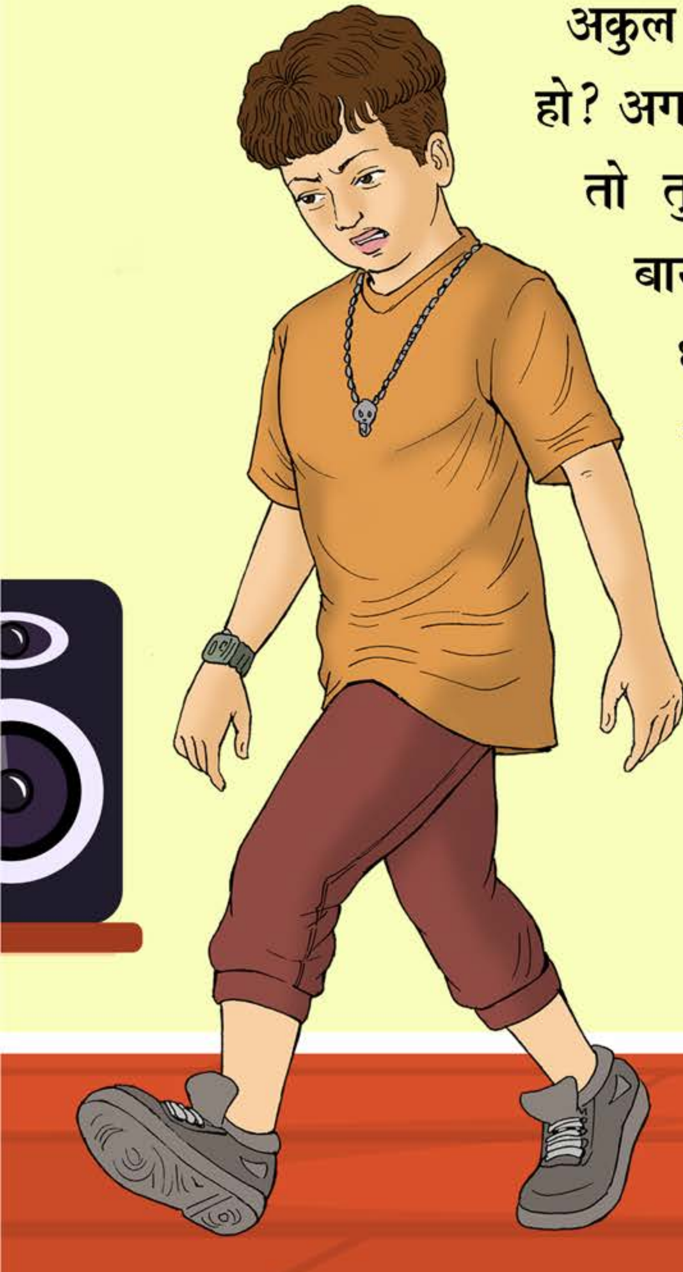

अकुल भी गुस्सा हो गया, ‘क्या कह रहे हो? अगर तुम्हें डान्स में नहीं रखना होता तो तुम्हारी सारी बातें नहीं मानते। बार-बार डान्स में से निकल जाने की धमकी क्यों दे रहे हो? जाना चाहते हो तो चले जाओ।’

‘ओके, ठीक है। जाता हूँ। तुम दोनों करना अपना डान्स।’ कहकर ऋषि चला गया।

ऋषि को पता था कि उसके बिना डान्स हो ही नहीं पाएगा। क्योंकि सभी स्टेप्स में तीन

डान्सर्स की ज़रूरत थी। लेकिन अब साहिल और अकुल ऋषि को बार-बार मना कर थक गए थे।

'अब हम क्या करेंगे?' साहिल ने पूछा।

'पता नहीं। डान्स के स्टेप्स बदल दें?' अकुल ने पूछा।

'लेकिन हमारे पास टाइम कहाँ है! अब तो बप्पा की स्थापना का दिन भी नज़दीक है। अब हम क्या करेंगे?' साहिल बोला।

और सचमुच, साहिल और अकुल को पता भी नहीं चला कि कब बप्पा की स्थापना का दिन आ गया। ऋषि ऑडियन्स में

बैठे हुए इधर-उधर नज़र घुमाकर साहिल और अकुल को ढूँढ़ रहा था। उसे पता था कि उसके बिना डान्स नहीं हो पाएगा। इसलिए उसने सोचा कि साहिल और अकुल भी निराश होकर ऑडियन्स में ही कहीं बैठे होंगे। उसे हैरानी हुई थी, जब अकुल और साहिल उसे मनाने नहीं आए। वह तो इंतजार करता ही रह गया कि कब वे दोनों उसे फिर से मनाने आएँ और वह डान्स में वापस जुड़ जाए। लेकिन आघात तो तब लगा जब उसने अकुल और साहिल को स्टेज पर देखा। उन्हें देखते ही उसके मुँह से निकला, 'मेरे बिना डान्स!' वे ऋषि के बिना डान्स करने वाले ही नहीं थे। लेकिन अब ऋषि की जगह स्टेज पर एक नया लड़का था। ऋषि को बैठे-बैठे ही चक्कर आ गए। डान्स शुरू हुआ और तीनों का

डान्स देखकर ऋषि तो दंग रह गया। इतने कम दिनों में उन्हें इतना अच्छा डान्सर मिल गया और उसने सारे स्टेप्स सीख भी लिए! ऋषि को विश्वास ही नहीं हो रहा था। लेकिन उस दिन तो ऋषि को मानों शॉक पर शॉक लग रहे थे। डान्स पूरा होने के बाद जब विवेक गोसाईं को उसने स्टेज पर जाते हुए देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। 'यूट्यूब' वाले विवेक गोसाईं यहाँ!!

विवेक गोसाईं ने स्टेज पर जाकर बच्चों को बधाई दी और साथ-साथ बच्चों को अपने एक टी.वी. शो में डान्स करने के लिए

आमंत्रित भी किया। ऑडियन्स में बैठे साहिल, अकुल और उस तीसरे लड़के के परिवार ने अपनी जगह पर खड़े होकर बहुत ज़ोरो से तालियाँ बजाईं। साहिल और अकुल की छोटी बहनों ने तो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपना उत्साह जताया। साहिल और अकुल की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

दूसरी ओर, ऋषि की मम्मी चुपचाप ऋषि को देख रही थीं। ऋषि को अफसोस करते हुए देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ। ऋषि ने अपनी मम्मी के कंधे पर सिर रखकर कहा, 'अगर मैं आज स्टेज पर होता तो मुझे भी टी.वी. पर डान्स करने का चान्स मिल सकता था।' उस दिन ऋषि को समझ में आया कि रूठने में कितना नुकसान है। साहिल ने उसे कई बार कहा था कि गुब्बारे की तरह मुँह फुलाकर बैठ जाते हो, तो एक दिन तुम्हारी सारी हवा निकल जाएगी और उस दिन सचमुच में उसकी हवा निकल गई।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए राउन्ड्स में कौनसा नंबर आएगा, पता लगाएँ।

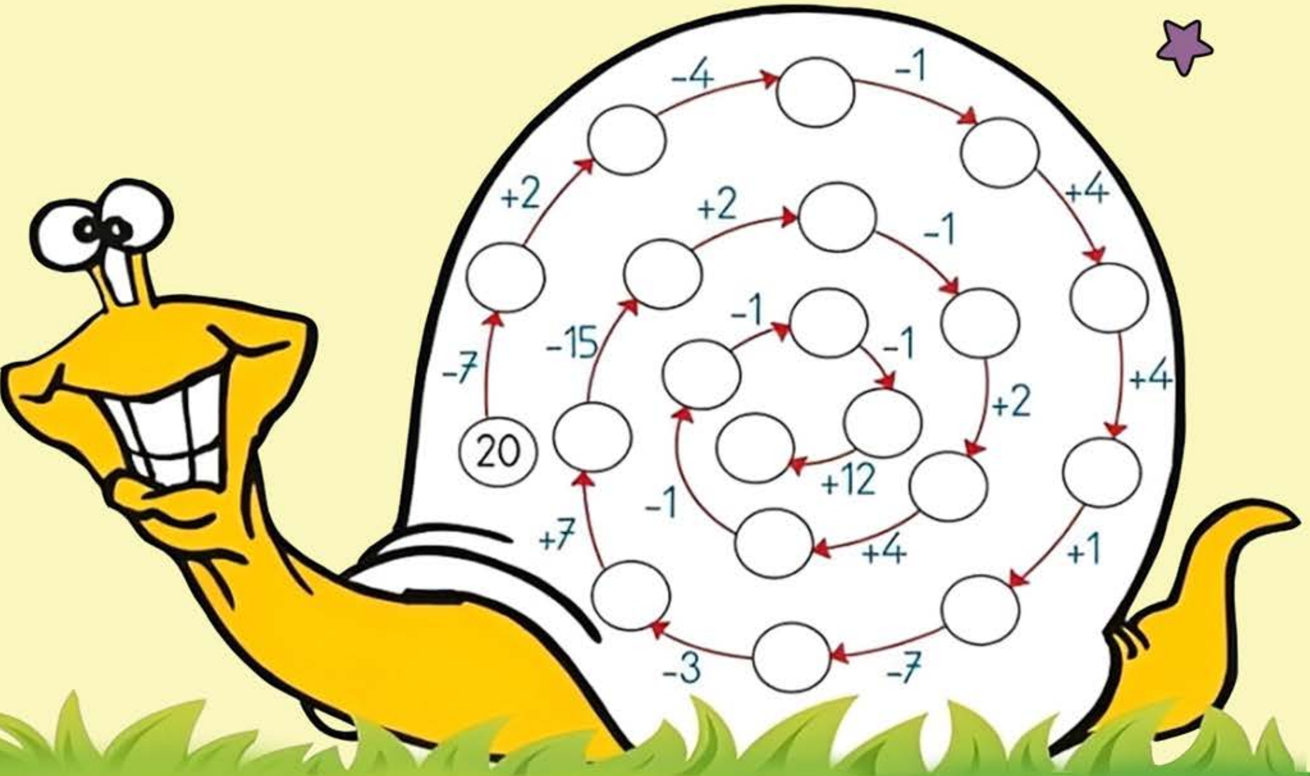

20 18 15 8 5

19 13 10 6

17 16 12 9 4

14 11 7 2

1 3

चलो खेलें...

नीचे दी हुई चीज़ें चित्र में कहाँ हैं, ढूंढिए।

ज्ञानी कहते हैं...

सच्चा बुद्धिशाली किसी से रूठता नहीं है। रूठने से तो नुकसान ही होता है। आप एक दिन रूठकर रात को झगड़ा करके नहीं खाओ, तो फिर सब क्या करेंगे? क्या सभी जागते रहेंगे? समय होने पर सभी सो जाएँगे। यानी कि आपको नुकसान होगा। आपको जो खुशी मिल रही थी रूठने की वजह से वह भी चली जाती है।

यह तो ऐसा है न कि मैं अगर इस गाड़ी के गार्ड से या ड्राइवर से रूठ गया तो वह कुछ देर में कहे कि 'भाई, बैठ जाओ न! अभी क्यों झगड़ा कर रहे हो? बैठ जाओ न!' लेकिन अगर मैं रूठा रहूँ कि 'नहीं बैठूँगा!' तो वह ट्रेन लेकर चला जाएगा या नहीं चला जाएगा? दुनिया कभी ठहरती है क्या? दुनिया तो चलती ही रहेगी। आप उसके

साथ एडजस्ट हो जाओ।

बचपन में एक-दो बार रूठकर देखा था, पाँच-सात साल की उम्र में। तब हमारे रिश्तेदारों के बच्चे आए थे। तब बा ने कुछ दिया था, मुझे वह कम लगा। खाने की कोई अच्छी चीज़ होगी, तो मुझे कम मिली मेरे हिसाब से। तब फिर मैंने कहा, 'मुझे नहीं खाना है।' तब रूठ गया था। अगर कोई मुझे कोई चीज़ देने का कहता और मुझे वह कम लगती तो मैं रूठ जाता था। वह जो चीज़ थी, वह तो वहीं पर रही और वे बच्चे तो खाकर चले गए। मेरी चीज़ वहीं पर रह गई। फिर उसे भी कोई खा गया। रात को मैं ढूँढ़ने गया तो मिली नहीं। मैंने कहा, 'वह कहाँ है?' तब कहा, 'वह तो खत्म हो गई भाई।' तब मैंने कहा, 'हाय! रूठने से तो मुझे ही नुकसान हुआ।'

मैंने यह हिसाब लगा लिया था कि इसमें पूरा नुकसान ही है। इसलिए मुझे फिर कभी नहीं रूठना है।

Balvignan Presets

ZigZag Zoom

Twist the mind & fix the pieces!!

Coming Soon

चोको
टुटी - फ्रुटी रोल

टुटी-फ्रुटी
१/४ कप

कोको पाउडर
२ चम्मच

कन्डेन्स्ड मिल्क
१/२ कप

मेरी बिस्किट
पाउडर - १ कप

बनाने का तरीका :

१. बिस्किट पाउडर, कोको और कन्डेन्स्ड मिल्क मिक्स करके आटे की तरह गूँथ लें।

२. आटे को पतला-पतला बेल लें, उसके उपर टुटी - फ्रुटी फैला लें।

३. रोल बनाकर आधा घंटा फ्रिज में रख दें।

४. स्लाइस काट लें - रंग-बिरंगी चोको टुटी - फ्रुटी रोल तैयार।

नीरू माँ ने बताई अपनी बात

एक बार मेडिकल कॉलेज में मेरी नाइट ड्यूटी थी। छत्तीस घंटे नॉन स्टॉप काम करके मैं घर आई थी। दो मिनिट भी बैठने का टाइम नहीं मिला था। बहुत भूख लगी थी और दिमाग पूरी तरह थक गया था।

नहा-धोकर मैं खाने बैठी। उस दिन श्रीखंड बना था। भाभी ने परोसा। मैंने चखा, लेकिन पसंद नहीं आया। मैंने भाभी से कहा, 'आपको पता है न कि मेरे श्रीखंड में मलाई होनी ही चाहिए। यह तो आपने सबके लिए बनाया, वैसा ही मेरे लिए भी बिना मलाई का सादा बना दिया?! मुझे नहीं खाना।' भाभी ने कहा, 'मैं अभी मलाई डाल देती हूँ।' पर मैंने कहा, 'अब नहीं!' और रूम में जाकर दरवाज़ा बंद करके बैठ गई। पूरा घर इकट्ठा हो गया। सबने सोचा, 'अब क्या करेंगे? कैसे मनाएँगे? अब

तो ये कल तक बाहर नहीं आएगी। खाएगी-पिएगी नहीं।'

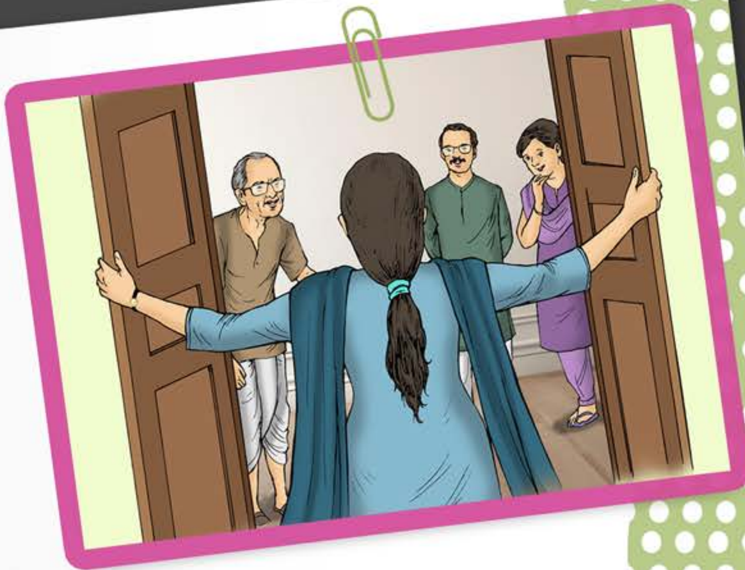

जैसे ही मैंने दरवाज़ा बंद किया, तो दो मिनिट में अंदर ऐसा लगा कि 'अरेरे! ये क्या किया मैंने? इसमें कहाँ किसी की गलती थी?' तो तुरंत ही दरवाज़ा खोलकर बाहर आ गई। हँसते हुए आकर टेबल पर बैठ गई। सभी को राहत महसूस हुई। फिर कभी किसी दिन रूठी नहीं।

दादा ने खास तौर पर कहा था कि 'यह नीरू बेन हमारे साथ इतने सालों से रह रही हैं। लेकिन कभी हमसे रूठे नहीं हैं।' मैंने दादा से कहा, 'दादा, आपसे क्या रूठना? मुझे तो एक मिनिट भी आपसे दूर रहना पसंद नहीं। अगर मैं आपसे रूठकर एक मिनिट भी दूर चली गई तो मेरी क्या हालत होगी! मेरे लिए यह बहुत कठिन होगा। इसलिए मैं तो कभी भी नहीं रूठती हूँ, दादा।'

पंख

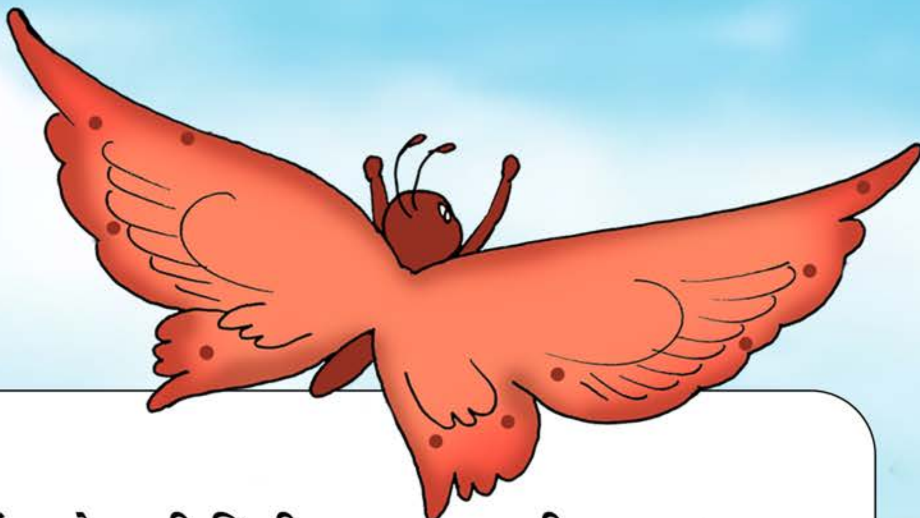

ग्रीनलैन्ड में रहने वाली लिली का बस एक ही सपना था, बड़े पंख पाना! लेकिन एक पतंगे के पंख कितने बड़े होते हैं और वह कितना ऊँचा उड़ सकता है? लेकिन लीली को तो बहुत ऊँचा उड़ना था। पता है क्यों? क्योंकि उसे जानना था कि 'क्या बादलों के उस पार कोई देश है? क्या वहाँ कोई रहता है?'

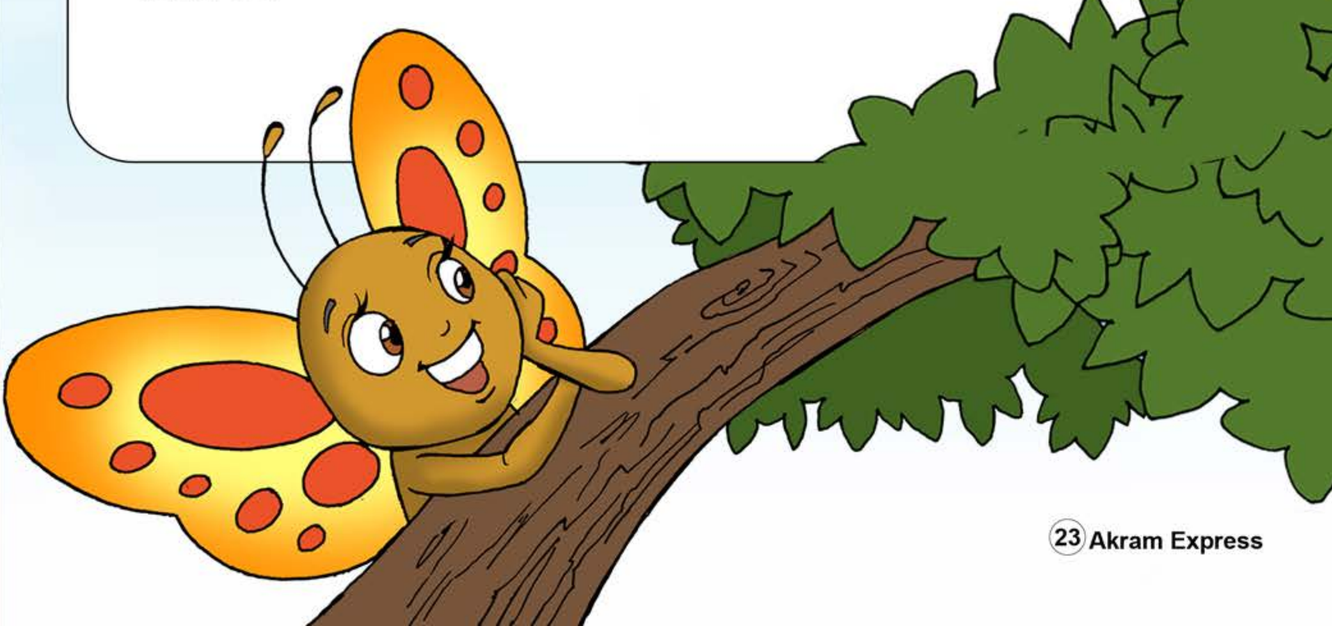

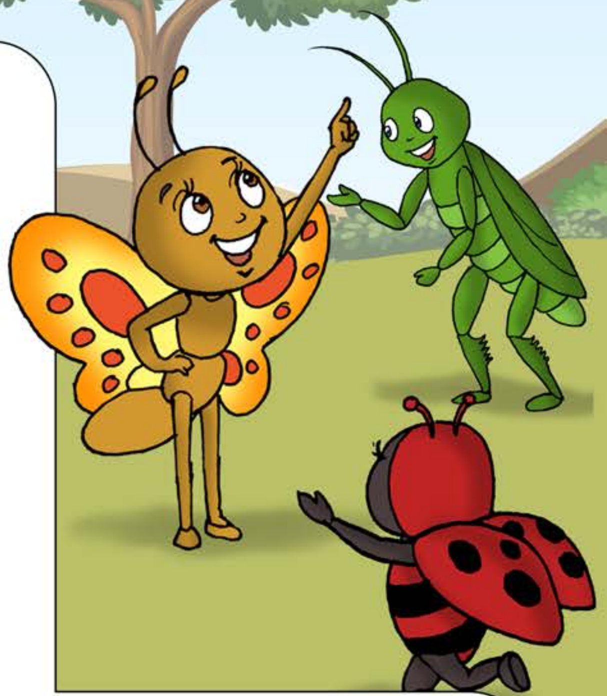

‘क्या मिस लिली! तुम्हारे सपनों को पंख मिले या नहीं?’ लिली का फ्रेन्ड ग्रासी (Grasshopper) बोला। ‘हाँ, ग्रासी। मेरा सपना पूरा होगा। हम एक साथ मिलकर बड़े पंख बनाएँगे और बादलों के उस पार जाएँगे!’ लिली ने आकाश की ओर देखते हुए कहा।

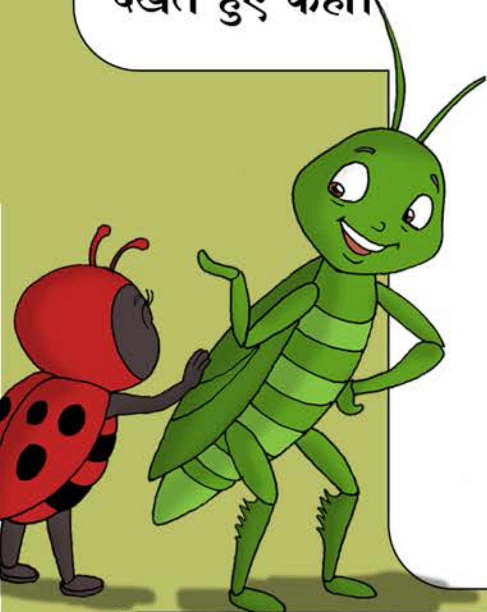

‘हाँ, हाँ, लिली हम बनाएँगे!’ रोज़ी बोली।

‘लो, मिस चमची बोलीं!’ ग्रासी ने रोज़ी का मज़ाक उड़ाया।

रोज़ी नाराज होकर बोली, ‘ग्रासी, तुम तो मेरे साथ बात ही मत करो!’

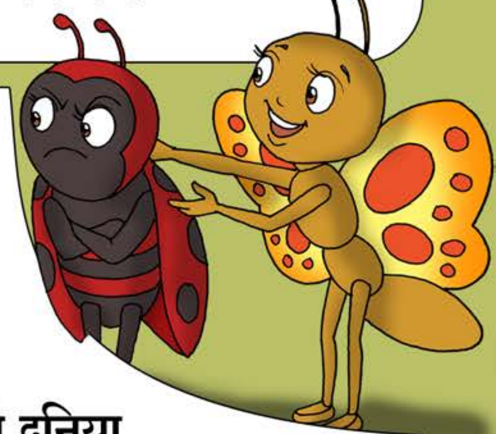

‘ओह रोज़ी, इतनी छोटी-छोटी बात में क्या बुरा मानना! अगर सचमुच पंख बन जाएँगे तो हम बादलों के उस पार की दुनिया में जाएँगे। कितना मज़ा आएगा!’ लिली ने रोज़ी को समझाया और बड़े पंख बनाने का तरीका भी बताया।

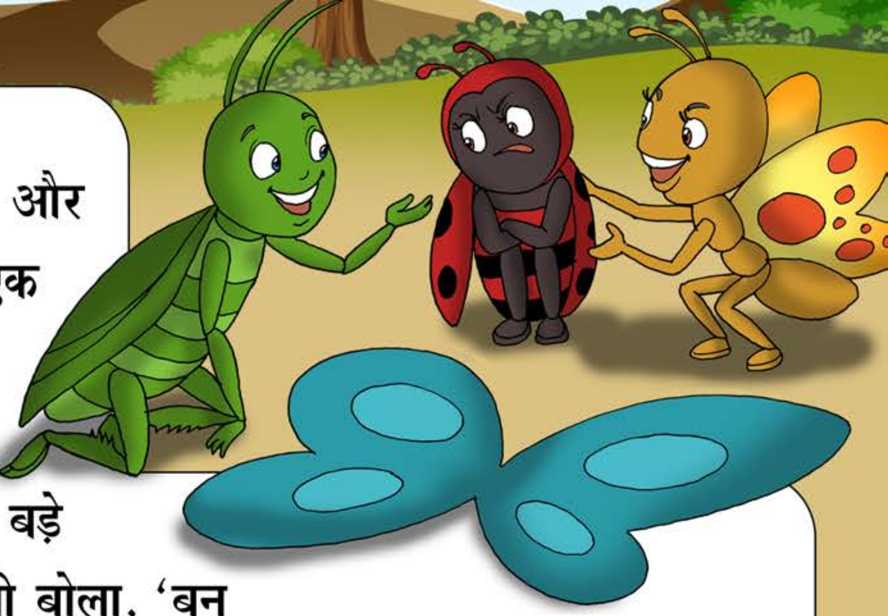

लिली, रोज़ी और ग्रासी दिन-रात एक करके पंख बनाने में लग गए और आखिरकार बड़े पंख बन गए। ग्रासी बोला, 'बन तो गए, लेकिन क्या ये पंख रोज़ी का वज़न उठा पाएँगे?!'

रोज़ी रूठकर बोली, 'मुझे ग्रासी के साथ कहीं नहीं जाना।' लिली ने ग्रासी को आँखें दिखाईं और रोज़ी को समझाने की कोशिश की, 'रोज़ी, ग्रासी तो ऐसे ही बोल रहा है। तुम उसकी बातों का बुरा मत मानना।'

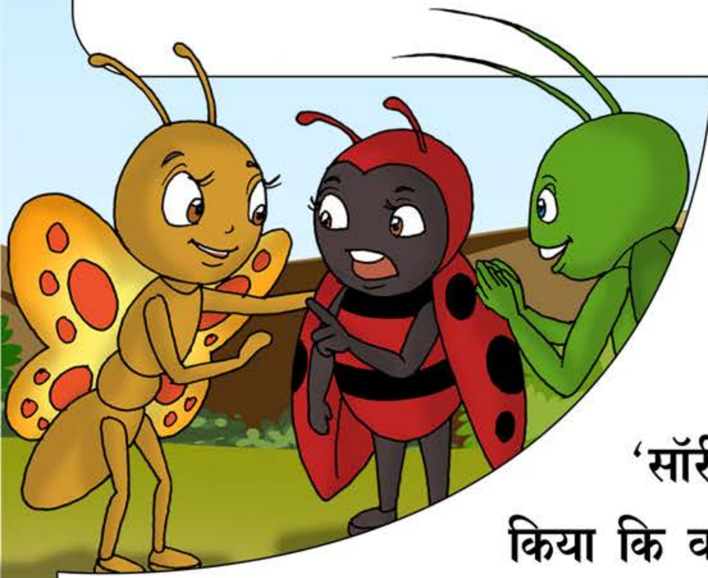

'लिली, जब तुम्हें बुरा लगेगा न, तब तुम्हें पता चलेगा।' रोज़ी गुस्से से बोली। ग्रासी ने रोज़ी को 'सॉरी' कहा और उससे प्रॉमिस किया कि वह फिर कभी उसका मज़ाक नहीं उड़ाएगा। तब जाकर रोज़ी का गुस्सा शांत हुआ। तीनों उड़ने के लिए तैयार हो गए। तीनों पेड़ की डाल पर जाकर बैठ गए। लिली ने पंख लगाए। ग्रासी और रोज़ी लिली के कंधे पर उसके बड़े पंख के पीछे बैठ गए।

'१,२,३...' कहकर लिली ने आकाश की ओर देखा और ऊपर उड़ने के लिए पंख ऊपर उठाए। लेकिन तीनों धड़ाम से नीचे गिर गए। घास पर गिरने के कारण रोज़ी और ग्रासी को तो ज्यादा चोटें नहीं आईं, लेकिन पंखों के वज़न के कारण लिली को थोड़ी चोट लगी।

लेकिन लिली को चोट लगने से ज्यादा अपना सपना टूटने का दुःख था। लिली को उसके घर पहुँचाकर रोज़ी और ग्रासी अपने-अपने घर जाने के लिए साथ-साथ निकले।

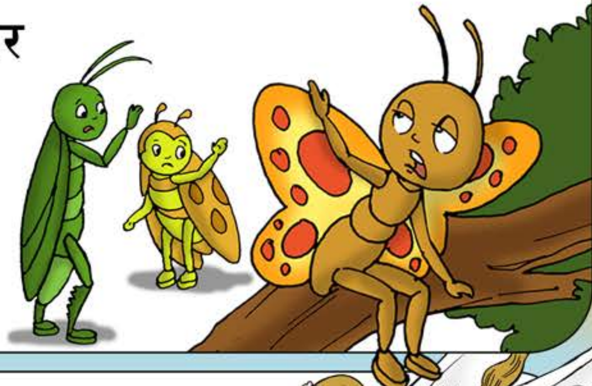

अंधेरा हो गया था। दोनों धीरे-धीरे चल रहे थे। अचानक उन्हें बड़े पंखोंवाली चमकती हुई एक सफेद परी दिखाई दी। दोनों उस सुंदर परी को देखते ही रह गए। एक सेकन्ड के लिए तो दोनों को लगा मानों वे कोई सपना देख रहे हैं। लेकिन परी बोली, 'मैं बादलों की परी हूँ। आज ग्रीनलैन्ड में घूमने निकली हूँ। मेरा घर जाने का टाइम हो गया है। क्या तुम लोगों को मेरे साथ बादलों के उस पार मेरे घर आना है?'

रोज़ी और ग्रासी तुरंत ही मान गए। परी ने दोनों पर एक चमकता हुआ पाउडर छिड़का और दोनों पंखों के बिना ही ऊँची - ऊँची उड़ान भरने लगे। परी आगे-आगे और रोज़ी और ग्रासी पीछे-पीछे। देखते ही देखते दोनों परीलैन्ड पहुँच गए। इतनी सुंदर दुनिया देखकर दोनों चकित रह गए। तभी रोज़ी को याद आया कि लिली को बताना तो भूल ही गए और वह वहीं रुक गई।

'ग्रासी, हमने लिली को तो बताया ही नहीं!' रोज़ी ने धीमी आवाज़ में ग्रासी से कहा। 'अरे, पर हमारे पास उसे बताने का टाइम ही कहाँ था।' ग्रासी बोला।

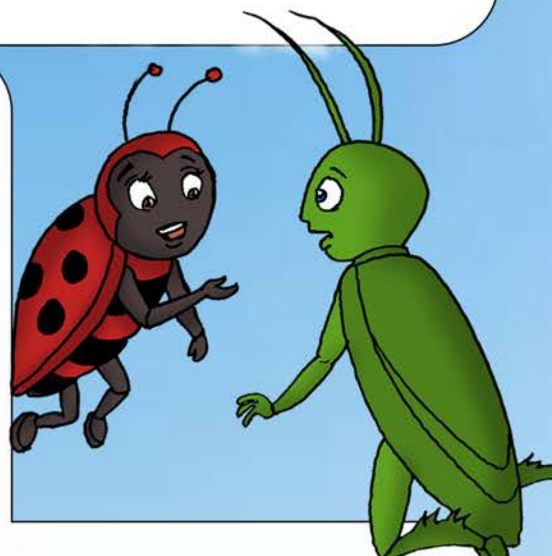

परी दोनों की बातें सुन गई, 'क्या तुम्हारी कोई फ्रेन्ड है, जिसे साथ लाना रह गया है?'

'हाँ। यह दुनिया देखने की उसकी बहुत इच्छा थी। अरे, उसके आइडिया से तो हमने पंख भी बनाए थे। लेकिन वे पंख काम नहीं आए और आज उसे ही बताए बिना हम यहाँ आ गए।' रोज़ी ने उदास होते हुए कहा।

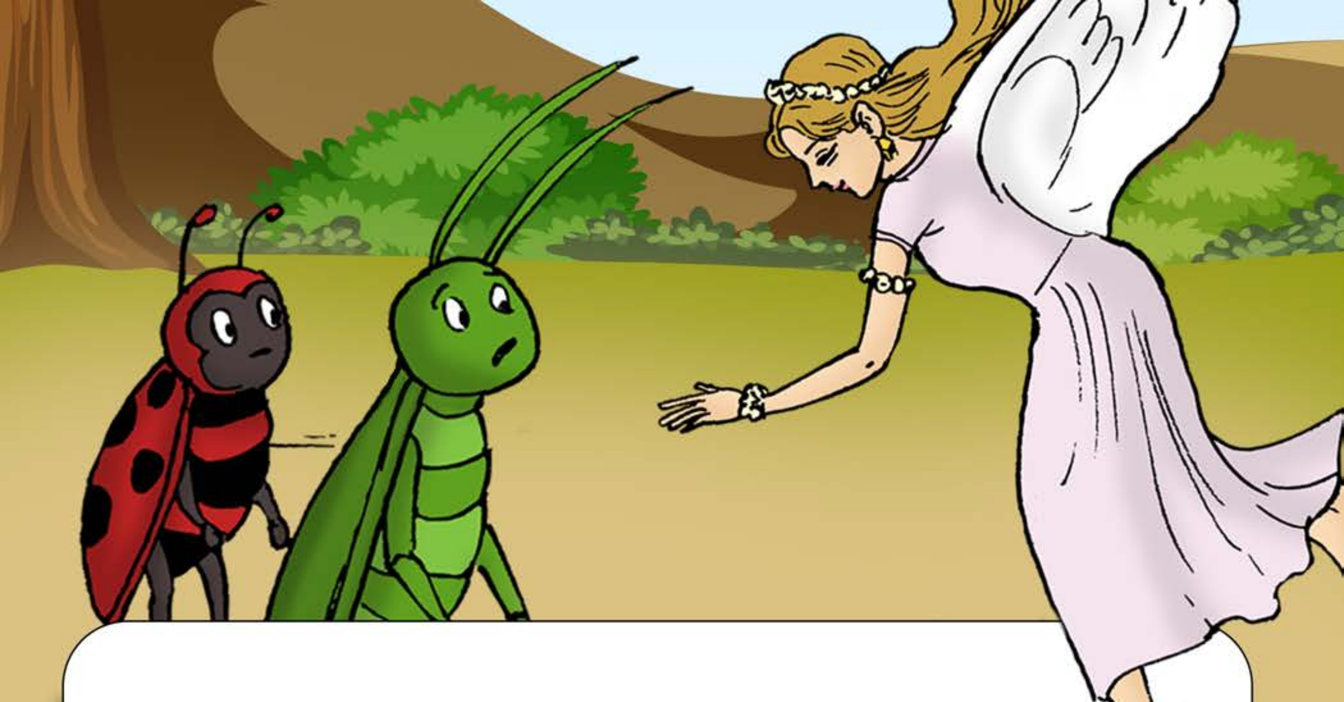

परी ने शांति से रोज़ी की बात सुनी। फिर दोनों को परीलैन्ड में घुमाया और उन्हें वापस उनके घर ग्रीनलैन्ड में छोड़कर परीलैन्ड में उड़ गई। दोनों ने तय किया कि वे लिली को कुछ नहीं बताएँगे। लेकिन लिली ने ही सामने से पूछा, 'तुम पर यह चमकता हुआ पाउडर कैसा? इस पाउडर से तो उड़ सकते हैं न?' कहकर उसने रोज़ी की पीठ से थोड़ा पाउडर लेकर एक पत्ते पर रखा तो पत्ता उड़ने लगा।

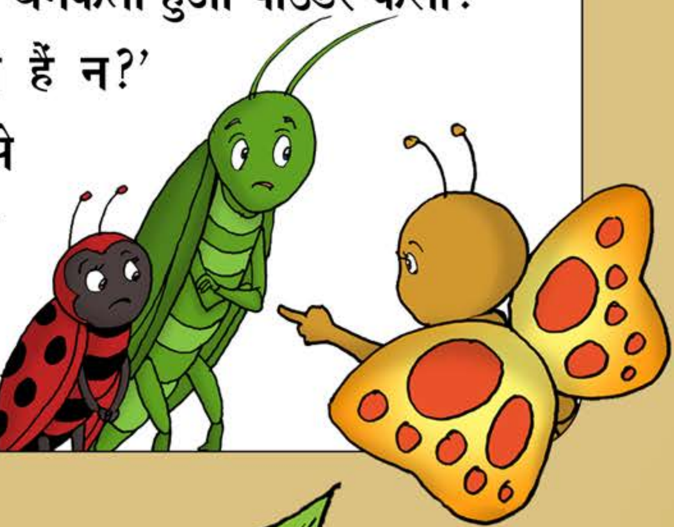

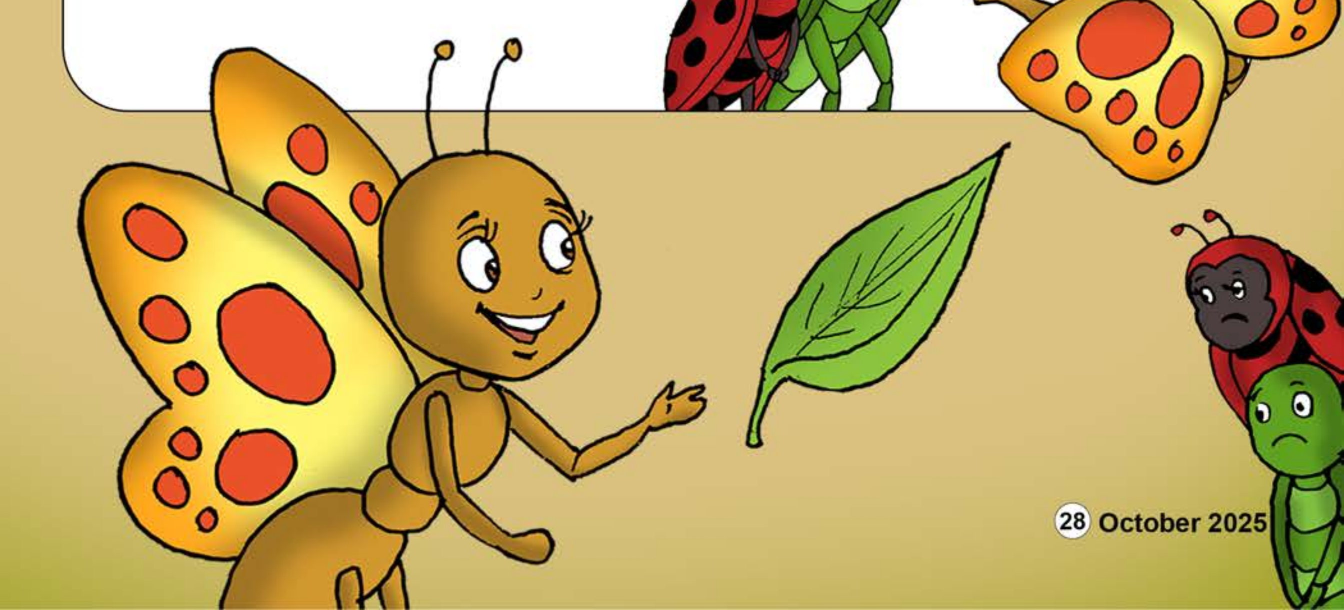

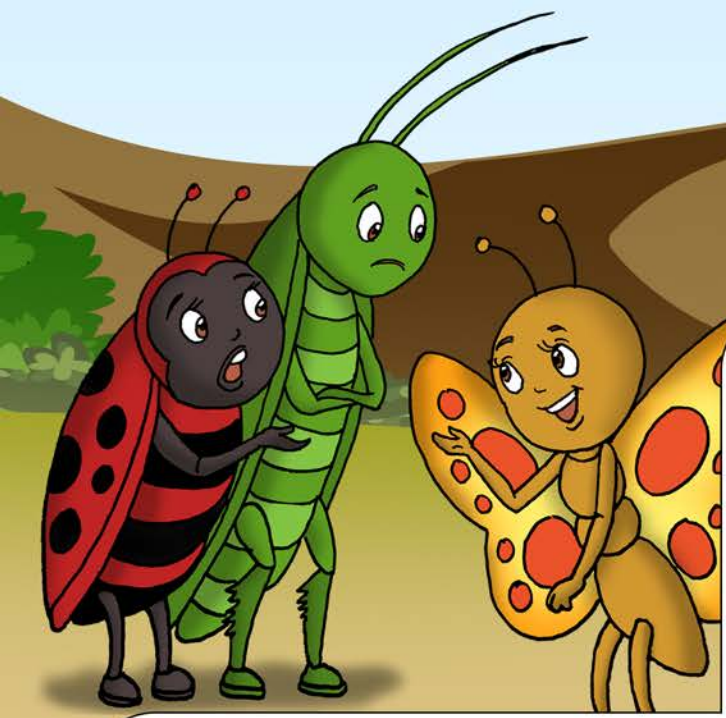

‘सॉरी लिली, हमें लगा कि तुम हमसे रूठ जाओगी। इसलिए हमने तुम्हें नहीं बताया कि कल हमें एक परी मिली थी और हमारे ऊपर यह चमकता हुआ पाउडर छिड़ककर वह हमें परीलैन्ड ले गई थी।’ रोज़ी ने कहा।

‘अरे इसमें क्या रूठना? मैं तो तुम लोगों के लिए खुश हूँ कि तुम लोग परीलैन्ड जाकर आए। चलो, चलो... अब मुझे बताओ कि परीलैन्ड कैसा है?!’ लिली ने उत्सुकता से पूछा।

‘लिली, तुम हमसे रूठी नहीं? तुम्हें बुरा नहीं लगा?’ रोज़ी ने अचरज से पूछा।

'नहीं, रूठने से क्या फायदा? मैं रूठूँगी तो मेरी खुशी गायब हो जाएगी। जो मूर्ख होता है वही रूठता है। मैं तो स्मार्ट हूँ और मेरे रूठने से कल रात वाली परी वापस थोड़ी न आ जाएगी?' लिली ने हँसते हुए कहा।

'लेकिन तुम्हारे नहीं रूठने से तो परी आ सकती है न...', कहते हुए परी वहाँ प्रकट हुई और लिली पर वह चमकता हुआ पाउडर छिड़ककर कहा, 'अब तुम्हारे पंख इतने मजबूत हो जाएँगे कि तुम जब चाहो तब उड़कर परीलैन्ड आ सकोगी और तुम्हारे फ्रेन्ड्स को भी अपने पंखों पर बिठाकर ला सकोगी! तुम कभी रूठती नहीं, इसीलिए ही तुम्हें ऊँचे-ऊँचे उड़ने का मौका मिल रहा है।'

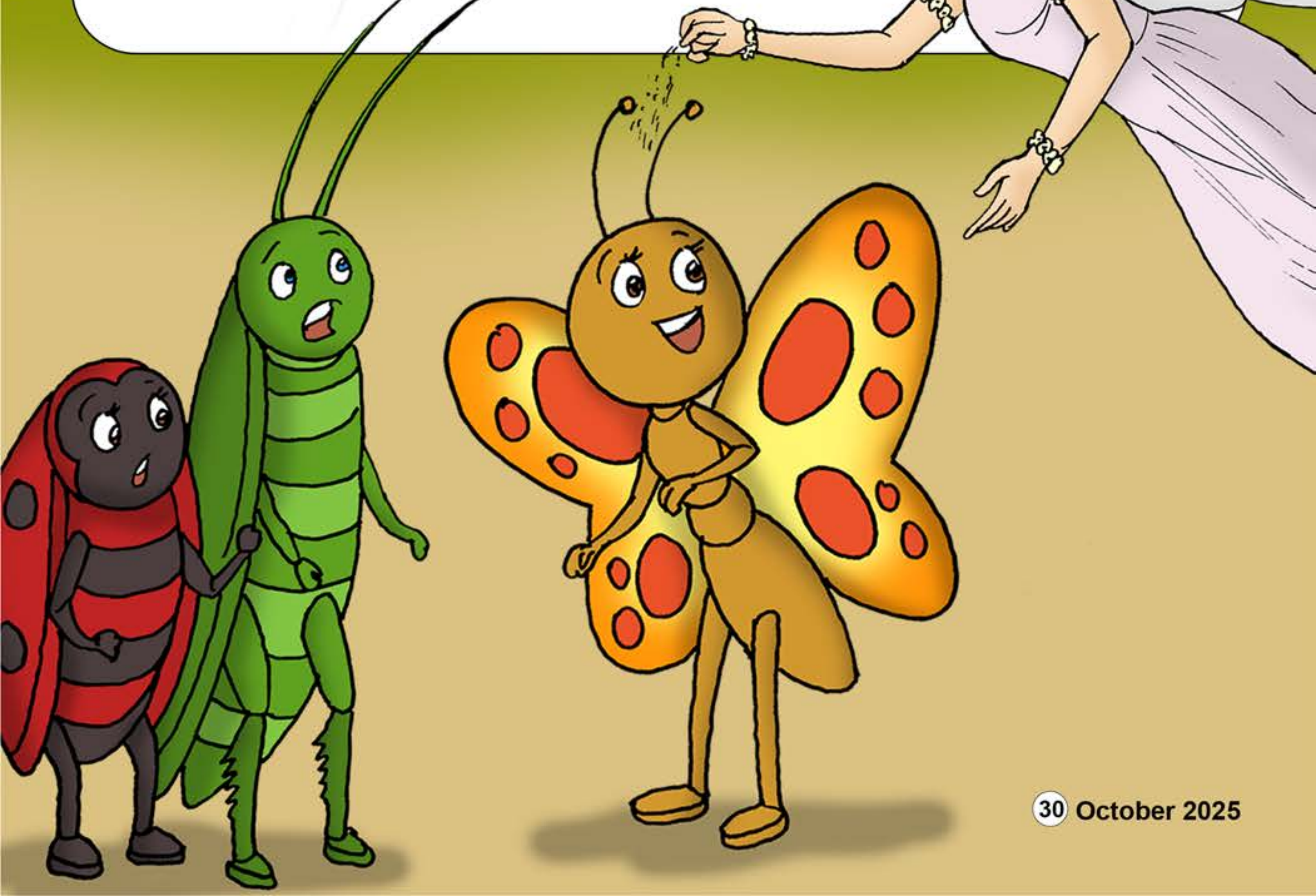

और अंत में

युद्ध के मैदान में रावण घायल होकर पड़े थे। वे अपनी अंतिम साँसें ले रहे थे। इस बात का पता चलते ही श्री राम की आँखों से आँसू बहने लगे। यह देखकर लक्ष्मण को आश्चर्य हुआ। लक्ष्मण ने सोचा कि जब शत्रु मरने वाला है, तब तो खुशी होनी चाहिए। लक्ष्मण ने उत्सुकता से श्री राम से पूछा, 'आपकी आँखों में आँसू क्यों हैं?'

श्री राम ने कहा, 'रावण तो गुणों के भंडार हैं। अगर हम यह बात छोड़ दें कि उन्होंने सीता का अपहरण किया, तो उनमें ऐसे कई गुण हैं जो प्रशंसा के योग्य हैं। इस समय रावण का मन कितना दुःखी होगा! लक्ष्मण, तुम अभी जाओ और रावण जैसे महापुरुष के अंतिम दर्शन का लाभ लो।'

लक्ष्मण तुरंत ही रावण के पास गए। उन्होंने अपने भाई श्री राम द्वारा कही गई सभी बातें रावण को बताई। अंत में कहा, 'रावण, आप सचमुच महान हो कि आपकी मृत्यु पर श्री राम रो रहे हैं।'

रावण बोले, 'महान तो श्री राम हैं। जो अपने दुश्मन का भी गुणगान कर रहे हैं! अब समझ में आया कि पूरा संसार श्री राम को वंदन क्यों करता है!'

लक्ष्मण स्तब्ध रह गए। पल भर के लिए तो उन्हें पता ही नहीं चला कि वास्तव में महान किसे कहा जाए? श्री राम को? रावण को? या दोनों को?